प्रातःक्लास 19 27-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

यह तो बच्चे जानते हैं कि बाप बड़ी लोदर घड़ी है। बिल्कुल एक्युरेट टाईम पर आते हैं। कांटों को फूल बनाने लिए। सेकण्ड भी कम जास्ती नहीं हो सकता। यह भी मीठे बच्चे जानते हैं इस समय है कलियुग कांटों का जंगल। तो फूल बनने वालों को यह प्रवृत्ता अभी चाहिए हम फूल बन रहे हैं। पहले हम सब कांटे थे। कोई छोटे कांटे कोई बड़े होते हैं। कोई बहुत दुःख देते हैं कोई थोड़ा कम। अभी बाप का तो सभी से हैं। गायन भी है कांटों से भी प्यार तो फूलों से भी प्यार। पहले किससे प्यार है? जब कहें कांटों से प्यार करते हैं। इतना प्यार है जो मेहनत कर कांटों से फूल बना देते हैं। अभी ही हम कांटों में दु है। और कांटे में ही प्रवेश कर फूल बनाते हैं। इसमें सर्वव्यापी की बात ही नहीं हो सकती। एक ही की महिमा होती है। महिमा होती है आत्मा जब कि आत्मा शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। श्रेष्ठाचारी भी आत्मा बनती तो भ्रष्टाचारी भी आत्मा बनती है। आत्मा शरीर धारण कर जैसे2 कर्म करती है उस अनुसार कहा जाता है यह तो कुकर्मी है। यह सुकर्मी है। यह जीव की आत्मा सुकर्मी है। आत्मा अच्छा वा बुरा कर्म करती है तब बाबा ने लिखा था कि भगवानुवाच अपने से पूछो सतयुगी दैवीफूल हो या कलियुगी आसुरी कांटे हो। कहां सतयुगी कहां कलियुगी। कहां डीटी कहां डेविल। बहुत फर्क है ना। जो कांटा होगा वह अपने को फूल कह न सके। फूल होते हैं ही सतयुग में। कलियुग में होते नहीं। अभी यह है संगम युग जब कि तुम कांटे से फूल बनते हो बाबा ने बहुत अच्छा लिख कर भेजा था। टीचर लेशन देते हैं ना। बच्चों का काम है उनको रिपीट कर बनाना बाप सबक देते हैं 2 लिखो। तो मनुष्य आत्मा ही सभी। बुद्धि का जूता लगाना है। सबसे बड़ा जूता तो पुराने जूते हैं। उस में यह भी लिखना चाहिए अगर फूल बनना चाहते हो तो अपनको आत्मा समझ और फूल बनाने वाले परमपिता परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे तमोप्रधान अवगुण निकल जायें और तुम सतोप्रधान जैसे सतोप्रधान बन जायेंगे। बाप ऐसे देते हैं। बच्चों का काम है कैसेट कर रिपीट कर छपाना। यह पत्रे एरोपलेन से भी गिराने चाहिए। तो सभी मनुष्यसोच में पड़ जायें। नारद की भी कथा है ना। नारद था भक्तों में सिरोमणी। जैसे माला के आठ दाने मुख्य हैं उनको कहेंगे ज्ञान सिरोमणी। यह गुरु लोग सब भक्ति सिखलाने वाले हैं। ज्ञान तो एक ही बार सिखलाया जाता है। भक्ति सिखाई जाती है 63 जन्म। भक्ति का ज्ञान बाप ही देते हैं। शास्त्र आदि जो भी हैं उन में भक्ति का ज्ञान है। वास्तव में उनको भक्ति का अज्ञान कहेंगे। परन्तु अज्ञान कहने से गुस्सा लगेगा इसलिए भक्ति का ज्ञान कहा जाता है। भक्ति से दुर्गति होती है ऐसे लिखने से भक्त लोग चिढ़ते हैं। है तो ऐसे ना। ज्ञान एक है सद्गति के लिए, अज्ञान एक ज्ञान है दुर्गति के लिए। यह तो पढ़ाई है। बेहद की वर्ल्ड की यह है हिस्ट्री-जागराफी। स्कूलों में पुराने वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी पढ़ाते हैं। नई दुनिया की हिस्ट्री-जागराफी तो कोई जानते ही नहीं। तो यह पढ़ाई भी है समझानी भी है। कोई छी-छी काम करना वैसमझ है। फिर समझाया जाता है विकारी काम दुःख देने का न करना है। दुःखहर्ता-सुखकर्ता यह बाप की महिमा है ना। यहां तुम भी सीखते हो। किसको भी दुःख न देना है। बाप यह शिक्षा दे रहे हैं। सदैव सुख देते रहे यह अवस्था कोई जल्दी नहीं बनती है। सेकण्ड में बाप से वर्सा तो ले सकते हैं बाकी लायक बनने में टाईम लगता है। समझते तो हैं बेहद के बाप का वर्सा है स्वर्ग की बादशाही। तुम समझते भी हैं परन्तु एक बाप से भारत को विश्व की बादशाही मिलती है। तुम विश्व के मालिक थे। यह तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। कल की बात है जो कि यह स्वर्ग के मालिक थे। मनुष्य तो कह देते हैं लाखों वर्ष। कहां एक एक युग की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। कहां सारी कल्प की आयु 5000 वर्ष है। बहुत फर्क है ना। ज्ञान का सागर एकही बेहद का बाप है। उन से दैवीगुण भी धारण करनी चाहिए। यह दुनिया के मनुष्य तो दिन-प्रति दिन तमोप्रधान हो बनते जाते हैं। और ही जास्ती अवगुण सिखते हैं। आगे थोड़े ही

इतने क्रप्शन, एडल्ट्रेशन, भ्रष्टाचार आदि था। दिन प्रति दिन तमोगुण बढ़ता जाता है। और यहाँ तुम बाप की याद की बल सतोप्रधान तरफ जा रहे हो। जैसे उतरते हो फिर जाना भी ऐसे है। पहले तो बाप मिला है इसकी खुशी होगी। कनेक्शन जुटा फिर है याद की यात्रा। जिसने जास्ती भक्ति की होगी उनको जास्ती याद की यात्रा होगी। बहुत बच्चे कहते हैं बाबा याद ठहरती नहीं है। भक्ति मार्ग में भी ऐसे होता है। शास्त्र सुनने बैठते हैं बुद्धि और2 तरफ भाग जाती है। सुनाने वाला देखता रहता है फिर अचानक पूछेंगे हम ने क्या सुनाया। फिर जैसे घाटे हो जायेंगे। कोई तो झट बता देंगे। एक जैसे सब को तो नहीं होती। भल यहाँ बैठे हैं, सुनते हैं परन्तु धारणा कुछ भी नहीं होगी। अगर धारणा हो तो फिर कमाल कर दिखावे। वह अपना और दूसरों का कल्याण करे बिगर रह न सके। भल किसको घर में बहुत सुख है, महल मोटरें आदि हैं, परन्तु एक बार तीर लग गया तो बस पति को भी कहेंगे हम यह रूहानी सर्विस करने चाहती हूँ। नहीं। अच्छा नहीं तो हम डायवोर्स देते हैं। जब बाबा को डायवोर्स दे सकते हैं तो पति को देने में क्या है। परन्तु माया बड़ी जबरदस्त है। करने न देती है। मोह है ना। इतने महल, इतने सुख सब कैसे छोड़ें। और यह इतने रावजी भागे, बड़े2 लखपति-करोड़पति घर के थे। छोड़ कर चले आये। यह तकदीर दिखाते हैं। इतनी ताकत नहीं है छुड़ाने का। रावण के जंजीर में इतनी जकड़ी हुई है। यह है बुद्धि की जंजीर। बाप समझाते हैं और तुम तो स्वर्ग के मालिक पूजने लायक बनते हो। बाप गैरन्टी करते हैं2। जन्म तुम विकार नहीं पड़ेंगे। स्वदेशी रहेंगे। तुम भल रहो पति के पास सिर्फ उनको छुट्टी लोपडित्र बनूंगी और बनाऊंगी। यह तो तुम्हारा फर्ज है बाप को याद करना। जिससे अपार सुख मिलता है। याद करते2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। कितनी सहज की बात है। शरीर पर भरोसा नहीं है। बाप की तो बन जाओ। उन जैसा प्यारी वस्तु दूसरी कोई है नहीं। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं कहते हैं मेरा बाहिर सतोप्रधान बनो। तुम अपार सुख लेवेंगे। पति को बोलो भगवानुवाच काम कटारी है। जैसे यह शंकराचार्य वाला किताब था, लिखा था नारी नर्क का द्वार है। अभी परमपिता परमात्मा शिव आचार्य कहते हैं नारी स्वर्ग का द्वार है। स्वर्ग का द्वार बाप इन नारियों से खुलवाते हैं। माताओं पर ही कलश रखा जाता है। माताओं को ही कुटी बनाया। सब कुछ तुम सम्भालो। बाप ने इन द्वारा कलश रखा था। शास्त्रों में फिर लिख दिया है सागर मथन किया, फिर अमृत का कलश लक्ष्मी को दिया। बाप कहते हैं माताओं पर ही कलश रखा फिर उन्हों ने सब को दिया। अभी तुम जानते हो बाप स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। तो क्यों न हम बाप से वर्सा लेवें। क्यों नहीं विजय माला में पिरोये जावें। महावीरणी बनें। दिलवाला मंदिर में महावीर और महावीरणी दोनों के चित्र हैं। महावीरणी को अन्दर कोठरी में रखा है। महावीर को बाहर में। वह घर के घेरेवाली अन्दर बैठी है। कोई मेल-फिमेल तो है नहीं। यह है एडाप्शन। बेहद का बाप गोद में लेते हैं। किसलिए? स्वर्ग का मालिक बनाने लिए। एकदम कांटों को फूल शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी कांटे में किया है। तो कांटों पर भी प्यार है ना। तब तो उनको फूल बनाते हैं। बाप को बुलाते ही हैं पतित दुनिया में पतित शरीर में हैं। निर्वाणधाम छोड़ कर यहाँ आओ। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार हमको भी आना पड़ता है। नम्बरवन कांटे में आकर नम्बरवन फूल बनाता हूं। तो जरूर प्यार है ना। प्यार बिगर फूल कैसे बनावेंगे। अभी कलियुगी कांटे से सतयुगी फूल देवता विश्व के मालिक बनो। कितना प्यार से समझाया जाता है। कुमारी फूल है तभी तो सब कांटे चरणों में गिरते हैं। वह फिर कांटा बनती है तो सब का माथा टेकना पड़ता है। तोप्र बेधा करना चाहिए। बाबा का फूल रहना चाहिए। तो स्वर फूल बन जायेंगे। कुमारी तो निर्विकारी है ना। भल जन्म विकार से लिया है सन्यासी भी तो विकार से जन्मलेते हैं। शादी आदि कर फिर पीछे घरबार को डोहाग देते हैं। धणी चला जाता है तो सभी निराधार बन जाते हैं। कितना दुःख देखकर जाते हैं। फिर उनको महान आत्मा कैसे कह सकते। महान आत्मा तो कृष्ण को कहते हैं। कहाँ यह सतयुग का महान विश्व का मालिक कहाँ यह कलियुगी। तब

दादा कहा प्रश्न लिखो। कलियुगी कांटो हो सतयुगी फूल हो। भ्रष्टाचारी हो या श्रेष्ठाचारी हो? यह है भ्रष्टाचारी दुनिया। जब रावण का राज्य है। कहते भी हैं आसुरी राज्य राक्षस राज्य है। परन्तु अपन को कोई समझते थोड़े ही है। अभी तुम बच्चे युक्ति से निकले हो। लिखते ही ऐसा युक्ति से हो जाए वह आपे ही समझ बराबर मैं तो इस तरफ का हूं। मैं तो कामी-क्रोधी कलियुगी कुत्ता हूं। लोभी भूत हूं। प्रदर्शनी में भी तुमको ऐसा दो। जो आपे ही उनको फिलींग आयेगा तो कलियुगी कांटा है। अभी तुम फूल बन रहे हो। बाप तो स्वर है वह कब कांटा नहीं बनता। बाकी सभी कांटे बनते हैं। वह फूल कहते हैं तुमको भी कांटा से फूल बना है। तो मुझे याद करो। माया कितनी प्रबल है। तो क्या तुमको माया का बनना है। बाप तुमको अपने तरफ खेंचते हैं माया अपनी तरफ खेंचती है। यह है पुरानी जूती। आत्मा को पहले2 नई जूती मिलती है। फिर पुरानी होती इस समय सभी तमोप्रधान जूतियां हैं। मैं तुमको बढ़िया का देता हूं। वहां आत्मा प्युर होने से शरीर भी बढ़ जैसा होता है। नो डिफेक्टेड। यहां तो बहुत डिफेक्टेड होते हैं। वहां के फिचर्स तो देखो कितना सुन्दर हैं। वहां के फिचर्स तो कोई यहां बना न सके। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको कितना उच्च बनाता हूं। व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र बनो। और जन्म-जन्मान्तर की जो कट चढ़ी हुई है उनको निकालने योग अग्नि है। इसमें सभी भस्म हो जावेंगे। तुम पक्का सोना बन जावेंगे। खाद निकलने की युक्ति तो बड़ी बताते हैं। मामेकं याद करो तुम्हारे बुधि में यह ज्ञान है। आत्मा भी बहुत छोटी है। बड़ी हो तो इन में प्रवेश कैसे करे। आत्मा को देखने लिए बहुत माथा मारते रहते हैं। डाक्टर लोग परन्तु देखने में नहीं आती है। सा होती है। अच्छा समझो तुमको बैकुण्ठ का सा० होता है इससे सिध होता है पुरानी दुनिया खत्म होनी है तो नई दुनिया का सा० होता है। परन्तु बैकुण्ठ में चले जो नहीं जावेंगे। इसके लिए तो पुरुषार्थ करना पड़े। सा० से कोई फायदा नहीं होता है। बने तब जब योग का अभ्यास करे। तो पहले कांटों से प्यार होता है। यहां तो बहुत कांटे हैं। तो भी बाप मीठे2 बच्चे कहते रहते हैं। प्यार है ना। सबसे जास्ती प्यार का साक्षी है बाप। तुम बच्चे भी मीठे बनते जाते हो। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। आत्मा भाई2 को देखो तो क्रिमनल खयालात बिलकुल उड़ जावेंगी। भाई-बहिन की सम्बन्ध से भी बुधि चलायमान हो जाती है। इसलिए भाई को देखो। वहां तो शरीर ही नहीं जो भान आवे याद, मोह की रग आवे। आत्मा तो नंगी है। तो अभी भाई-बहिन के सम्बन्ध में नहीं ठहरना है। बाप आत्माओं को पढ़ाते हैं तो तुम भी अपन को आत्मा समझो यह शरीर तो विनाशी है इन से थोड़े ही दिल लगानी है। सतयुग में इन से प्रीत नहीं होती है। मोह-जीत राजा की कथा सुनी है ना। बोलो आत्मा एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेगी, पार्ट मिला हुआ है। मोह क्यों रखो। इसलिए बाप भी कहते हैं खबरदार रहना है। अमा मरे, दीदी मरे तो भी हलवा खाना। यह प्रतिज्ञा करो कोई भी मरे हम रोवेंगे नहीं। मां जैसी प्यारी कोई चीज नहीं होती। उनको पार्ट बजाना चली गई। तुम अपन पुरुषार्थ करो। मम्मा याद करती है न करती है उसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुम अपने बाप को याद करो। सतो प्रधान बनो। और कोई रास्ता नहीं। पुरुषार्थ से ही विजय माला के दाना बनेंगे। पुरुषार्थ से जो चाहो बन सकते हो। बाप तो समझते हैं कल्प मिशल ही पुरुषार्थ करेंगे। बाप तो है ही गरीब निवाज़। दान भी गरीबों को कि जाता है ना। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं न गरीब न शाहुकार। तुम बच्चे ही जानते हो। भारतवासियों का पार्ट है गाली देना। ग्लानी करना। जिस भारत को इतना उच्च बनाया। उन्हों ही कितनी दुर्गति की है। ठिकाने भितर में ठोक दिया है। अभी बाप कहते हैं तुम्हारे लिए धर्म स्थापन करता हूं। वहां दुःख का नाम नहीं। जिनको सुखदेता हूं वही फिर कांटे बन गाली देने लग जाते हैं। कितनी ग्लानी करते हैं मेरी तो तो दे की भी। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चो प्रिंट स्कूली बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग मीठे बच्चों को नमस्ते